राजेश प्रभाकर

गुरुग्राम

दुनिया के बाज़ार में, बिकने लगे शरीर ।
खरीदार की भीड़ में, इज्ज़तदार अमीर ।।

सबकी साझी धूप थी, साझी सबकी छाँव ।
हवा शहर की ले गई, पुरखों का वह गाँव ।।

कुत्तों की चौपाल में, बिल्ली भी खामोश ।
चूहे से चूजा कहे, मत खो देना होश ।।

सब से रहकर दूर मैं, रहा उसी के साथ।
देखो रे कतरा रहा, वही मिलाते हाथ ।।

मटरगश्तियाँ खा गई, जीवन का वह भाग ।
जिसमें केवल लक्ष्य से, करना था अनुराग ।।

सच्चाई के ताल में, जमा हुआ शैवाल ।
कीच भरा है झूठ का, आदर्शों का काल ।।

तितली जैसी बेटियों, से दुनिया रंगीन ।
बनकर कातिल कोख़ के, ज़ुर्म करे संगीन ।।

बहरा भी सुनने लगा, गूंगा बोले बोल ।
जैसे ही खुलने लगी, भरी सभा में पोल ।।

धोखेबाजी झूठ के, जहाँ बजेंगे शंख ।
वहाँ कटें ईमान के, चतुराई से पंख ।।

राजा का सच ही लगे, चाहे हाँके डींग ।
बिल्ली खींचे ऊँट को, गर्दभ के सिर सींग ।।

शर्मिला चौहान

महाराष्ट्र

बचता भागा शीत से, ढूँढे धूप बसंत।
धूप गुनगुनी देखकर, बैठा बनकर संत।।1।।

पत्तों ने तरु त्याग के,किया भूमि पर वास।
चली पवन जब जोर से, पत्ता उड़ा अकास।।2।।

सजा रूप किसलय जड़ा, अंग-अंग इठलाय।
माणिक से श्रृंगार कर, पीपल फूला जाय।।3।।

फूली सरसों खेत में, पियरी में सकुचाय।
साफा सिर पर बाँधकर, चना अकड़ता आय।।4।।

फगुआ आवत देखकर, बौराया है आम।
मादक महक बिखेरता, सुबह दोपहर शाम।।5।।

फगुनाई से झूमते, चटक रंग के फूल।
भौंरों के अधरों चुभें, चुप्पी साधे शूल।।6।।

तोता मैना झूलते, अमिया की इक डार।
ऋतु बसंत का आगमन, करें प्रेम मनुहार।।7।।

थाप सुनी जब ढ़ोल की, नाच उठा मन मोर।
राग-रंग रस प्रीत का, उठता हृदय हिलोर।।8।।

थाल लिए निज हाथ में, आया टेसू राज।
पक्के सच्चे रंग से, रंगता सबको आज।।9।।

प्यारी वसुधा डोलती, कितना सुन्दर नृत्य।
धरा सदा सजती रहे, करना ऐसे कृत्य।।10।।